॥ ओ३म् ॥

१८८८३

दिग्विजयी दयानन्द

भारतीय

११८६
द. दि. का. 32

कित गये मोह तजि हा भारत भ्रम नासी ।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥

शत वर्षायू से अधिक हमें आशा थी ।
बहु अत्याचार मिटन की अभिलाषा थी ॥
उद्दीपन तुमसे संस्कृतार्य्य-भाषा थी ।
लाखन मन शंका-निवृत्ति जिज्ञासा थी ॥

दोहा—यजुर्भाष्य पूरण कियउ ऋग किय पौन प्रमान ।
द्वादशांग व्याकरण सरल किय भूगोल हित जान ॥
रहि साम अथर्वण वेद-भाष्य की प्यासी ।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ १ ॥

काशी के पंडित बाल शास्त्री नामी ।
मन हार मान भए अन्य लोक के धामी ॥
तिन प्रचलित किए पुराण [illegible] तासु स्वामी ।
जिन के खंडन हित बने आप अग्रगामी ॥

स्वामी [illegible]ानन्द दण्डी
[illegible] पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 1152
दयानन्द महिला म[illegible]

दोहा—या कोऊ सुरलोक में चली पौतलिक रीति।
जिसे जतावन के लिये धाए धर उर प्रीति॥
रहि आर्य्यवर्त्त के सुजन हृदय ममता सी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ २॥

कर धर्म्माधर्म बिचार सत्य प्रतिपादन।
कहि वर्णव्यवस्था गुणानुसार पुरातन॥
बल वीर्य्य बिना पुरुषारथ देख अनेकन।
वर्जित की बाल-विवाह प्रथा सुखवर्धन॥

दोहा—महाऋषिन के नाम जे मिथ्या ग्रन्थ प्रचार।
उनकी भूल सुधार हित सृजे तुम्हें कर्तार॥
अवतरे विक्रमी ठारासौ इकियासी (१८८१)
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ ३॥

औदीच्य वंशवर गुजराती विप्रन में।
मोरवी नृपति को राज सुबस बड़पन में॥
सब कुटुम्ब श्रेष्ठ परिवार कमी नहीं धन में।
जन्मे तब बटी बधाई घर आंगन में॥

दोहा—प्रथम मूलशङ्कर परेउ नाम हेतु कल्यान।
जस नामा तस ही गुणा प्रगटे विद्याभान॥
आठवें वर्ष उपनयन लियो सुखराशी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ ४॥

कर वेदारम्भ हिय ज्ञान विचारन लागे।
इक दिवस पिता लेगए पार्थिव आगे॥
शिवरात्रि जागरण कियो अर्ध निशि जागे।
देखे शिवलिंग पर मूसे फिरते भागे॥

दोहा—तबहि भयो संदेह मन पत्थर शिव कस थाय।
मूषक श्वान मजारतें आप न सके बचाय॥
बस मुक्ति ज्ञान बिन करें पोपलीला सी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ ५॥

जब भए वर्ष सोलह के आप सयाने।
तब चचा बहन लघु किय परलोक पयाने॥
उनके वियोग में ब्रह्मचर्याश्रम ठाने।
ब्याहन की बिरियां पहिने भगवां बाने॥

दोहा—उन्नीसौ अरु तीन सन, संध्या को चुपचाप।
विद्या करन उपार्जन चले योग ले आप॥
बहु योगी जन संन्यासिन के रहे पासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ ६॥

गुरु विरजानन्द से पढ़े न्याय व्याकरणे।
सुख ब्रह्मचर्य्य गृह-आश्रम के बहु वरणे॥
हो वनस्थ बन संन्यासी लगे विचरने।
सुन सदुपदेश लाखन जन लगे सुधरने॥

दोहा—कीरति ब्रह्मावर्त्त की कहि यथार्थ प्राचीन।
संस्कार सन्ध्या सुलभ द्विजहित कीन प्रवीन॥
मन पोप धूर्तन के भइ घोर उदासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ ७॥

वर सुगम ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित।
सत कुठारतें कटगए मत कपोलकल्पित॥
जिन वृथा समय कलियुग को कियो कलंकित।
तिनको समझायो समय विचार अचंभित॥

दोहा—पुण्य पाप न्यूनाधिकी नित मनुजन में होइ।
सत त्रेता द्वापर कली कहलावत है सोइ॥
अस काल द्रव्य संख्या युग कहि अविनाशी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ ८॥

जो थे सज्जन विद्वान् भद्र अरु ज्ञानी।
वे सत्यासत्य विचार बने विज्ञानी॥
कतिपय अज्ञानी जैनी कुटिल कुरानी।
अरु पक्षपात में ग्रसेजु अधिक पुरानी॥

दोहा—पर सब निज २ मतन पर करन लगे पुनि ध्यान।
वज्रनाद जिमि सुनत ही हों चौकन्ने कान॥
श्रुति अर्थ अचंभित अस षोडशी कलासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ ९॥

जो भाष्य वेद के रचे भूमिकायुत हैं।
प्राचीन ऋषिन के समान अति अच्युत हैं॥
है धन्य तुम्हारो पुरुषारथ अद्भुत है।
जो निन्दा करहिं तुम्हार तिमिर में धुत है॥

दोहा—याते मैं ऐसे कहूं उन मनु-जन ढिंग धाय।
पक्षपात अब तो तजो ऐसो सद्गुरु पाय॥
वेदानुकूल चल टारे दुख चौरासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १०॥

फो अंग्रेजन से धर्म-पक्ष में लरिहै।
वेदन में सब विद्या प्रसिद्ध को करिहै॥
गौअन की करुणा कौन हृदय में धरिहै।
ब्राह्मण क्षत्रिय द्विज नृप फब चक्षु उघरिहै॥

दोहा—मोक्षमूलरी भाष्य की कौन जतावे भूल।
वेद शब्द गौरव गहन बढ़ा जमावे मूल ॥
छूटेगी कब भारत आरत विपदासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ ११ ॥

गुरु कौन गुफा में योग ध्यान धर ध्यानी।
तुम सत मास के प्रथम मृत्यु पहिचानी ॥
सब भूपशिरोमणि उदियापुर (उदयपुर) रजधानी।
सर्वस्व उन्हें समझाय किए निज थानी ॥

दोहा—परोपकारिणी सभा के श्री सज्जन सरदार।
त्रयोविंशति भद्रजन को दे निज अधिकार ॥
स्वीकारपत्र लिख गए जु हाल खुलासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ १२ ॥

बर विदुर प्रजागर सत उपदेश सुनायो।
पढ़कर श्री सज्जनसिंह नृप हिय हुलसायो ॥
दे मानपत्र सुकुमार प्रेम दरसायो।
"म्हे अठै आप का निवास सूं सुख पायो" ॥

दोहा—पुनः आन कर दीजियो दर्शन बारंबार।
बिदा कीन आदरमयी समझ जगत् हितकार ॥
शाहपुराधीश को देख अधिक जिज्ञासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी ॥ १३ ॥

शाहपुराधीश उपदेश सुन्यो चित लाके।
पुनि गए जोधपुर आप निमन्त्रण पाके ॥
मुरधर मरु जान गँवार विना विद्या के।
महराजन को की शि[illegible] जता के ॥

दोहा—देशफाल सुखदुख चिंता किय चौमासा तेर।
सँह हत्यारे काल ने घाल्यो तुम पर घेर॥
अर्बुदगिरि के परसन हित करी निकासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १४॥

श्री यशवन्तसिंह प्रताप भूप दोड आये।
सन्मान सहित म्याने में तुम्हें सुलाये॥
तंबू खस २ संग रथ घोड़ा पहुंचाये।
वाटिका के दरवाज़े लगि प्यादे धाये॥

दोहा—स्वामीजी हम या समय लखि बिछोए बिलखायँ।
मुरधरेश मुख से कही चिन्ता वरणि न जाय॥
तव देह-दशा लखि २ हम होंइ हिरासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १५॥

पुनि कही यह पंखा-फलायुक्त संग लीजे।
दे फटि-पेटी विनती की कमर कसीजे॥
आरोग्य होइ पुनि वेगहि दरशन दीजे।
पाली स्टेशन द्वारा खबर करीजे॥

दोहा—तार आपको आत ही हाजर होउँ ज़रूर।
कृपाभाव हम पर सदा बनो रहे भरपूर॥
अरदली मांहि कर दिये बहुत चपरासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १६॥

कर कूंच गए अर्बुदगिरि मजलन मजलन।
गुरु वहां देह त्यागन की तुम ठानी मन॥
जब शीतज्वर से लगे भृत्य घबरावन।
महाराज चलो अजमेर विनय को सब जन॥

दोहा—श्रीमुख से ऐसे कही या पर्वत को वास।
संभव है कुछ रोग में शांति होन की आस॥
शीतल समीर सुखदायक स्वच्छ सुवासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १७॥

कहें लछमनसिंह चिकित्सक "स्वामी मेरे।
यहां पर सब लोगन को शीतज्वर घेरे"॥
सुनि वचन विनययुत बारंबार घनेरे।
अजमेर किए कोठी भिनाय में डेरे॥

दोहा—छिन २ रुज की अधिकता होन लगी तत्काल।
बढ़त वेग बादलमयी श्वासा को विकराल॥
विष बढ़्यो अंग किन दीन्हों सत्यानाशी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १८॥

परमेश्वर ग्रह वेदन पर शून्य (१९४०) लगाई।
कैसी यह वैरिन साल अभागी आई॥
चहुँदिशि अमावस्या ने अंधेर मचाई।
मंगल दिन पायो स्वर्गवास सुखदाई॥

दोहा—दीपमाल सन्ध्या समय मध्यम कातिक मास।
तब विद्या के दीप जनु घर घर भए प्रकाश॥
कर प्राणायाम समाधि ओ३म् अरदासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ १९॥

यह दशा देख आरज समाज कुम्हलाये।
बिन सत उपदेशक नैनन नीर बहाये॥
स्वीकारपत्र आपस में बांचि सुनाये।
लेखानुसार तन क्रिया कर्म्म करवाये॥

दोहा—दक्षिण दिशि जा नगर के वेदी रच चौकोर।
ऋचा शिष्यगण उच्चरत लाए तन सा ओर॥
कर दियो यज्ञ नरमेध वेदविधि खासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ २०॥

अब स्वामी तुमसों नज़र न कोऊ परे है।
जो संशय सबके मनके दूर हरे है॥
क्या परोपकारिणी सभा विचार करे है।
किस भय से जेठू मन के मांहि डरे है॥

दोहा—महाविद्यालय के लिए अजहुं न भई समर्थ।
धर्म न जाने काम कब सिद्ध होइ है अर्थ॥
यों कहे जेठमल कटिहै कब दुविधासी।
श्रीमद्दिग्विजयी दयानन्द संन्यासी॥ २१॥

जोधपुर से स्वामीजी महाराज की रुग्णावस्था के समाचार प्राप्त होने पर इस कविता के रचयिता अजमेर से स्वामीजी महाराज की सेवा में जोधपुर पहुंचे थे। इसके अतिरिक्त उन्हें, जब २ स्वामीजी महाराज अजमेर में विराजते थे, उपदेशामृत पान और सत्संग का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

इस रचना के संबन्ध में परोपकारिणी सभा के चतुर्थ अधिवेशन में तारीख़ २८-१२-१८८८ को निश्चय संख्या २० इस प्रकार अङ्कित हुआ है-

(२०) पढ़ा गया—लाला ज्येष्ठमल मेम्बर आर्यसमाज का एक पत्र लिखा तारीख़ २८-१२-१८८८ का इस आशय का कि मैं जोधपुर गया था, वहां मारवाड़ के श्री दरबार ने स्वामीजी महाराज का जीवन-चरित्र सुन कर मुझे १००) एकसौ रुपये प्रदान किये उनमें से मैं ७९) रुपये तो अजमेर समाज के मंदिर बनाने में और २१) श्रीमद्दयानन्द आश्रम के चन्दे में ज्यों के त्यों भेट करता हूं।

निश्चय हुआ—कि सभा को इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई कि ज्येष्ठमल जैसे एक साधारण आर्य ने इस द्रव्य की कुछ भी लालसा न करके उसे अर्पण कर दिया है अतएव उसकी सुख्याति की जावे।

परोपकारिणी की स्थापना पर हर्ष बधाई

अहो आज आनन्द बधाई ।

विद्वज्जन एकत्र होइ कर, परोपकारिणी सभा बनाई ॥ १ ॥
श्रीमत् परमहंस परिव्राजक, स्वामी दयानन्द कृत हित आई ॥ २ ॥
कोउ स्वयं धरि परिश्रम आए, कोउ देत प्रतिनिधि पहुंचाई ॥ ३ ॥
तन मन धन अपनो सरवस तेहि, स्वामि दियो तिनको संभलाई ॥४॥
वे हि प्रण नियम निबाहन के हित, निज २ सम्मति देत जनाई ॥ ५ ॥
समझि महान लाभ या जग में, विद्या वृद्धि करें एकताई ॥ ६ ॥
श्रीमद्दयानन्द आश्रम कहि, पढ़न काज चटशाल खुलाई ॥ ७ ॥
बालक पढ़ें चतुर वर्णों के, प्रबन्धयुत प्रारम्भ पढ़ाई ॥ ८ ॥
आर्यसमाजें और भद्रजन, परोपकारिणी करत सहाई ॥ ९ ॥
सन्ध्या अग्निहोत्रादिक जे, बालकपन में जाइ सिखाई ॥ १० ॥
सुनहु मित्र अजमेर नगर के, डगर द्वार लिख २ चिपकाई ॥ ११ ॥
श्रोताओं को देत निमंत्रण, आर्य्यसमाज हृदय हुलसाई ॥ १२ ॥
विज्ञापन छपवाइ मनोहर, देइं भद्र प्रतिदिवस बँटाई ॥ १३ ॥
सत उपदेशन के जो ग्राहक, सुनउ आइ इत नित चितलाई ॥ १४ ॥
कोऊ तो भाषत देशोन्नति को, कोउ कह आप धर्म दरसाई ॥ १५ ॥
काहू के मन देश का दुखड़ा, कह पुकार दोउ भुजा उठाई ॥ १६ ॥
कोउ विद्या इतिहास बड़न के, पुरुषारथ को देत जताई ॥ १७ ॥
कोउ योग, कोउ सत्व व्याकरण, ब्रह्मदेश को करत बड़ाई ॥ १८ ॥
कोउ ज्योतिष, कोउ शिल्पकृषि, कोउ गोरक्षा हित देत दुहाई ॥१९॥
अहो भ्रातृगण सुनउ श्रवण कर, बार २ मनु-तन नहिं पाई ॥ २० ॥
विद्यारीसको ओ धनाढ्यो, अजहू किमि सोवत अलसाई ॥ २१ ॥
बनो सहाई दीर्घ दृष्टि दे, तुमरि सन्तति हेतु भलाई ॥ २२ ॥
यामें जो कुछ संशय होवे, शंका किमि नहिं लेउ मिटाई ॥ २३ ॥
तुम हित वेदभाष्य किय स्वामी, धन २ दयानन्द ऋषिराई ॥ २४ ॥

सार गहो जे आर्य्य ग्रन्थ हैं, तजहु परस्पर कलह लड़ाई ॥ २५ ॥
सुफल जन्म कसि करहु न अपनो धृक वे जन नहीं तजत ढिठाई २६।
उत्तम पुरुष वही जग मांही, परमारथ हित सुमति उपाई ॥ २७ ॥
कहत जेठमल दास सदन को, बना भजन यह दियो सुनाई ॥ २८ ॥

तृतीय परोपकारिणी सभा

लखि कर करुणा भारत भू की, मिलि सज्जन सुमति प्रचार करें।
धन धन यह दिवस धन २ यह घड़ी, धन विद्या हेतु हुलास करें ॥

कोउ आवत पूरब पश्चिम से, उत्तर दक्षिण से विद्वज्जन।
प्रतिनिधि बन पर-उपकारिणी के, जु सभा जुर सभ्य करें स्थापन।
सतधर्म्म सनातन परिपाटी, जो सब मनुजन की सुखवर्धन।
पुनि पाठन पठन प्रचारे षोडश, संस्कार को संशोधन ॥
जगदीश्वर अब सबके मन की, बेगहि पूरण अभिलाष करें ॥

धन २ यह दिवस धन २ यह घड़ी धन विद्या० ॥ १ ॥

श्री स्वामी दयानन्द स्वर्ग गए, जिनको है व्यतीत चतुर्थ बरस।
स्वीकार कियो निज तन मन धन, महद्राजसभा सन्मुख सरवस ॥
मुद्रांकित कर गए इह विधि हो, परस्वारथ हित व्यय रात दिवस।
विद्यालय हो दीनालय हो, वेदादि पढ़ायं प्रचार सुयश ॥
तेईस पुरुष दस द्वै मासों, में नियम प्रत्येक विकाश करें ॥

धन २ यह दिवस धन २ यह घड़ी धन विद्या० ॥ २ ॥

उत्साह बढ़ाय सदा आवत, श्रद्धायुत द्रव्य प्रदान करें।
कोउ भूमि देई अति हर्ष २, उत्तेजित कार्य्य महान करें ॥
जित देखो उस वेदध्वनि है, नव २ व्याख्यान बखान करें।

प्रफुलित सब आरज पुरुष हिये, देशोन्नति के गुनगान करें ॥
आनन्द दयानन्द आश्रम की, यह नींव थपी कैलाश करें ॥
धन २ यह दिवस धन २ यह घड़ी धन विद्या० ॥ ३ ॥

सिरमौर उदयपुर महाराणा भेजे कवि श्यामल, मोहन को ।
यह भार लियो मसुदाधिपति अपने पर कार्य्य विलोकन को ॥
शाहपुरेश बाग कियो अर्पन धन धन उनके उत्साहन को ।
मोहन निज हाथन अस्थि धरी, स्वामी के कौल निबाहन को ॥
उनतीस दिसम्बर (१८८७) चढ़तो दिन उपमा ये जेठू दास करे ॥
धन २ यह दिवस धन २ यह घड़ी धन विद्या० ॥ ४ ॥

दयानन्द-आश्रम

अब तो कछु या भारत की दशा जगी है ।
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है ॥
इक भये महात्मा सरस्वती प्रणधारी ।
सारी आयू-पर्य्यन्त रहे ब्रह्मचारी ॥
पढ़ वेद चतुर्दिशि विद्या-बेल पसारी ।
लह धर्म्म सनातन देशाटन अनुहारी ॥
लखि भारत को अति हीन मलीन भिखारी ।
उपदेश यथावत दियो बेग विस्तारी ॥
सुन लाखन जन तन मन धन बुद्धि संवारी ।

दौड़—महाराज, आर्य्यकुल-कमल-दिवाकर,
मेदपाट, सिरमौर सज्जनसिंह, महाराणा निज निकट बुलाय ।
मनुस्मृति, पढ़ी सब विदुर प्रजागर ध्यान लगाय ॥
वा योगी को कछु दरस्यो योग मंझारी ।
महाराज, कह्यो मम जीतेजी जिमि संरक्षण हो,

मृत्यु व्यतीते है सर्वस तुमको अधिकार।
यही दक्षिणा, वेद विद्या का जहँ तहँ होय प्रचार॥

दोहा—त्रयोविंशति भद्रजन हैं मुझको स्वीकार।
संस्कार मम देह को कीजो विधि अनुसार॥

चौपाई—अगर तगर कर्पूर मंगइयो, वेदी रच कर यज्ञ करैयो।
गाड़ियो न जल मांहि बहइयो, ना कहुं कानन में फिकवैयो॥

छंद—चार मन घृत मंगाकर पुनि तपा स्वच्छ छनाइयो,
चिता चन्दन पूरियो दो मन अवश्य हि लाइयो।
काष्ठ दश मन चुन जुगत से दग्ध तन करवाइयो,
वेदमन्त्रों की ऋचा उच्चारते मुख जाइयो॥
वा. कर्म-क्रिया को सबकी रुचि उमगी है।
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है॥ १॥

सुनियो अब भारतवर्ष दयानन्द को है,
जो परोपकारिणी सभा रची वह यह है।
महिमहेन्द्र फतेहसिंह उदय-सूर्य चमको है,
संरक्षण पद निज धीर वीर धारो है॥
उपसभापति पद मूलराज धरण्यो है,
कविराज मंत्री श्यामलदास बन्यो है।
इक द्वितीय मन्त्री को पद शेष रह्यो है,
दोड़—महाराज, पंडिया मोहनलालजी, विष्णुलालजी, मथुरावासी,
उपमन्त्री पद हृदय लगाय।
धारण कीन्हों, कार्य्यवाही, करते नित प्रेम बढ़ाय।
अष्टादश मुख्य सभासद् सुन्दर सोहें,
महाराजाधिराजा नाहरसिंह शाहपुराधीश,

अजमेर बगीचो, दियो आश्रम हेत चढ़ाय।
ताम्रपत्रिका सुघड़ बनवाय, करी अर्पण लिखवाय॥

दोहा—अजयमेरु उत्तर दिशा अन्नासागर पाल।
या सम बड़ी न भूमिका घाट-भूमि को थाल॥

चौपाई—धन्य धरनि सरवर बड़भागी,
धन्य क्षेत्र पुष्कर अनुरागी॥
काय दयानन्द स्वामी त्यागी,
पुनः नींव आश्रम की लागी॥

छंद—मध्य भू खुदवा गढ़ा अनुमान ले इक ताल को,
कर दियो प्रारम्भ कछु दरसा पुरातन चाल को।
अस्थि लेकर मसूदापति सौंप मोहनलाल को,
इक रुदन दूजो हर्ष है वरनूं कहा या हाल को॥
उस महर्षि की मानसी अग्नि सुलगी है,
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है॥ २॥

प्रतिवर्ष सभा जुड़ आ इत सुमति उपावे,
कोइ प्रतिनिधि युत अपनो सन्देश भिजावे।
रावत अंसीद अर्जुनसिंह वर्मा आवे,
बेदला तख्तसिंह राव राय पहुंचावे॥
महाराजा श्री गजसिंह विचार प्रगटावे,
श्रीमान् राव श्री बहादुरसिंह हरखावे।
स्वामी हित पूर्ण प्रेम प्रीति दरसावे,
दौड़—महाराज नृपति महाराणाजी श्री फतेहसिंहजी देलवाड़ा,
लिखो नाम मैं देऊं गिनाय,
सुपरिन्टेन्डेन्ट, सु पंडित सुन्दरलाल विचार जनाय।

जयकृष्णदास जी. सी. एस. आई. बतलावे,
महाराज, कलेक्टर डिप्टी जो बिजनौर,
और लाहौर के साईंदास कहाय।
जगन्नाथजी फर्रुखाबादी दुर्गाप्रसाद आय॥

दोहा—कमसरियेट गुमाश्ता छेदीलाल मुरार,
सेठ जु निर्भयरामजी कालीचरण उचार।

चौपाई—राव गुपाल देशमुख मेम्बर,
महादेव गोविन्द जज्जवर।
दाना माधवदास अकलवर,
पण्डित श्यामकृष्ण प्रोफ़ेसर॥

छंद—सभासद ऊपर कहे है, सभा परउपकारिणी।
वैदिक सुशिक्षा दे बनी है, अवश्य देश सुधारणी,
आर्यवर्त अनाथ दीनों के जो कष्ट निवारिणी॥
दयानन्द की भक्त बन स्वीकार प्रति विस्तारिणी,
बहु दिन से वैदिक विद्या तोप दगी है।
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है॥ ३॥

स्वीकारपत्र के बचन सभा बरतावे
यदि उचित होय तो नियम घटाय बढ़ावे॥
सम्मति सब आर्य्यसमाजों से मंगवावे
सम्भव हो सो कर पृथक् और ठहरावे॥
वैदिक-यंत्रालय को हिसाब अजमावे
श्रद्धायुत चन्दा निज निज करन चढ़ावे॥
त्रय सभासदों से अधिक न घटने पावे।

दौड़—महाराज जहां लगि उनके पद पर सभ्य भद्रजन,
धर्मध्वजी वा आर्यपुरुष कोई नियत न थाय।

पक्षपात तज अधिक पक्षानुसार बहु रचें उपाय ॥
श्री सभापति की सम्मति द्विगुण मिलावे।
महाराज त्याग सब विरोध जो कुछ झगड़ा,
टंटा उपजे वाको आपस में लेवें निबटाय।
न्यायालय की हो सके तहां तलक नहीं गहें सहाय ॥
दोहा—स्वामी दयानन्द लिख गये अन्त समय यह पत्र।
तेहि प्रण पूरण करन हित सभा होइ एकत्र ॥

चौपाई—धन्य दयानन्द श्रुति पथ चीन्हो,
भारत हित तन मन धन दीन्हो।
बन दृष्टान्त कह्यो सो कीनो,
मन वच काय सुयश जग लीन्हो ॥

छन्द—अजमेर केसरगंज में चटसाल यह बनवायगी,
राज-भाषा संस्कृत जिसमें पढ़ाई जायगी।
करहु चंदा सकल जन मिलि लाभ यह पहुंचायगी,
विदेशन विद्या गई जो बहुरि घर को आयगी ॥
इक धर्म वृद्धि कहे जेठू सदा सगी है।
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है ॥ ४ ॥

चेतावनी

बिन कारण वैर अरु निंदा को, मत कीजिये सज्जन आपस में,
अभिमान तजो सन्मान लहो, कछु ज्ञान विचारो अंतस में,
जंह तंह रहो प्रीति बढ़ा करके, मन धरिये धीरज अरु जस में,
यह अर्ज करें सोढा जेठू, मद लोभ, क्रोध राखिये बस में ॥

सद्गुरु की महिमा

सद्गुरु की वाणी, अमृत रस का प्याला।
पी प्रेम ध्यान से रहे न गड़बड़ झाला॥
पहचान उसे जो तुझ को चेताता है।
जैसा जो कुछ तूं करे वो भुगताता है॥
लखि रचना क्यों कर्ता को विसराता है।
अज्ञान नास्तिक कैसे कहलाता है॥
वह अन्तर्यामी घट घट का रखवाला। पी प्रेम० ॥१॥
गुरु ऐसा कर जो सदा रहे ब्रह्मचारी।
उपदेश करे जैसा वो बर्त्ते सारी॥
विद्या वृद्धि हित करे तपस्या भारी।
दे सत्या-सत्य जनाय जक्त हितकारी॥
कण्ठस्त हो चतुर्वेद मन्त्रों की माला। पी प्रेम० ॥२॥
गुरु प्रथम निरंजन, प्रणाम बारम्बारा।
प्रणवूं पुनि ब्रह्म ऋषिन वच सुपथ संवारा॥
वेदानुकूल आचरण सभी को प्यारा।
जो यथायुक्त धारे वह गुरु हमारा॥
दे खोल हृदय के अन्धकार का ताला। पी प्रेम० ॥३॥
गुरु मात पिता, आचार्य्य अतिथि कहलावे।
गुरु परोपकार हित अपनी देह तपावे॥
गुरु दयानन्द सा बीड़ा कौन उठावे।
को वेदभाष्य की घर २ कथा सुनावे॥
यों कहें नमस्ते जेठू भोला भाला।
पी प्रेम ध्यान से रहे न गड़बड़ झाला॥ ४॥

मूल्य)॥ प्रकाशक—ब्रह्मदत्त सोढा लाखनकोटरी, अजमेर
मुद्रक—वैदिक यन्त्रालय, अजमेर.